क्या होती है 'अच्छी' कक्षा ?

सुबीर शुक्ला

अक्सर लोग ऐसा कहते हैं कि ज़्यादातर शिक्षक पढ़ाना ही नहीं चाहते। इसलिए शिक्षकों के लिए एक 'अच्छी ' कक्षा का स्वरुप ढूँढना बेमानी है। समय की बर्बादी है।

ये बीड़ा उठाने की कोई ज़रूरत है क्या ?

आम तौर पर ऐसे तर्क देनेवाले व्यक्तियों के पास शिक्षकों के लिए बहुत सी नसीहतें होती हैं। वे क्या करें, क्या न करें इस पर उनके ढेरों निर्देश होते हैं। ऐसी बातें कहने वाले इस बात को नज़रअंदाज़ करते हैं कि एक सरकारी स्कूल की शिक्षक बड़ी कठिन परिस्थितियों से घिरी होती हैं -अलग अलग स्तर के बच्चों की निरंतर आवाजाही वाली जनसँख्या, बहुत से ऐसे बच्चे जिनकी घरेलू परिस्थितियाँ शिक्षा के लिए मददगार नहीं हैं और एक ही कक्षा में कई भाषाओँ की मौजूदगी! ऐसे में स्वाभाविक है कि शिक्षकों को ज़्यादातर नसीहतें किसी दूसरे के सपनों की फेहरिस्त लगती हैं और इन कठिन परिस्थितियों में उन पर खरा उतरना असंभव ही है।

मुझे ऐसा लगता है कि 'एक अच्छी कक्षा क्या है?' इस प्रश्न को उन बातों से जोड़ना ज़रूरी हैं जो संभव हैं, न कि सिर्फ उनसे जो वांछनीय हैं। जब शिक्षकों को लगेगा कि एक अच्छी कक्षा गढ़ना संभव है तो ज़्यादा शिक्षक वास्तव में अपनी कक्षाओं को बेहतर बनाने का प्रयास करेंगे। ऐसा क्यों? क्योंकि ऐसा करने में उन्हें संतुष्टि मिलेगी और मज़ा भी आएगा। नीरस या प्रफुल्लित जीवन के बीच चुनाव करना इतना मुश्किल भी नहीं!

कक्षा किसे कहते हैं ?

'कक्षा' किसे कहते हैं? एक शिक्षक ने ही इस प्रश्न का सबसे खरा उत्तर दिया था। एक विदेशी कोष की मदद सेचलने वाले प्रोजेक्ट के भविष्य को लेकर चर्चा हो रही थी कि प्रोजेक्ट आगे चलेगा कि नहीं और अगर नहीं चलेगा तो स्कूलों का क्या होगा। तब उस शिक्षक ने कहा था कि 'कुछ नहीं होगा! विदेशी कोष की मदद बंद होने पर भी स्कूल को कुछ नहीं होगा। स्कूल को सिर्फ एक ईमारत, किताबें, खिड़की, दरवाज़े मान लेना गलत बात है। जो मेरे बच्चों और मेरे बीच होता है वास्तव में वो स्कूल है। लोग आ के दरवाज़े ले जाएँ, ईमारत को तोड़ दें तो भी वो इस चीज़ को नहीं छू सकते जो मेरे बच्चों और मेरे बीच होती है।'

एक कक्षा एक सीखने की परिस्थिति है। उसके भौतिक पहलू, हालाँकि उनका अपना महत्त्व है, उतने ज़रूरी नहीं हैं जितने उसके भावनात्मक, बौद्धिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू हैं। एक कक्षा उसमें मौजूद सहभागियों की परस्पर क्रिया से परिभाषित होती है यानि बच्चों और शिक्षक और कभी कभी अन्य लोगों (जैसे कि समुदाय के सदस्य) के बीच जो आदान प्रदान चलता है। उसके भौतिक पहलू अपने आप में

मददगार साबित हो सकते हैं परन्तु वो इस क्रिया को तय नहीं कर सकते। इस लेख में धन राशि की ज़रूरत वाली चीज़ों के बनिस्पत इस क्रिया पर ज़्यादा ध्यान दिया जायेगा।

कम काम करिए !

कुछ साल पहले मैंने एक 'मॉडल ' स्कूल का दौरा किया जहाँ तथाकथित गतिविधि आधारित शिक्षण लागू था। इस स्कूल के एक शिक्षक ने कहा कि ऐसा शिक्षण बहुत थकाने वाला था! उसकी कक्षा में जाने पर मैंने पाया कि वो स्वयं गाना, एक्शन वगैरह सब कुछ कर रहा था जब कि बच्चे बैठे बैठे उसे देख रहे थे! स्वाभाविक है कि यह शिक्षण थकाने वाला लगेगा।

यूँ देखा जाए तो एक आम कक्षा में भी हम ज़्यादातर ऐसा ही करते हैं। हम बच्चे के लिए सब कुछ सोचते हैं, सारे उत्तर हम देते हैं और ज़्यादातर हम 'स्पूनफ़ीडिंग' करके ये मानते हैं कि हम बहुत मेहनत कर रहे हैं ! कई बार, चाहे कोई बात बच्चों को पहले से भी पता हो, हम उसी बात को बार बार पढ़ाते रहते हैं। हम इतना भी पता नहीं करते कि बच्चे उसे स्वयं कर सकते हैं या नहीं।

इस प्रकार, एक अच्छी कक्षा की ओर पहला कदम है कि काम कम करिए! जो बातें बच्चों को खुद करनी चाहिएँ उन्हें आप न करें। अपने आप को एक सुगमकर्ता समझें न कि ज्ञान की वितरक। बच्चों के पूर्वज्ञान और समझ का उपयोग करें (यकीन मानिये वो प्रचुर मात्रा में होती है) । इतना स्थान बनाइये कि बच्चे खुद अपनी समझ बना सकें। ऐसे मुद्दों पर समय व्यर्थ न करें जिनकी जानकारी उनको पहले से है, उन विषयों की पहचान करिये जिनमें उन्हें वास्तव में मदद की दरकार है और उन पर अपना ध्यान केंद्रित करिये।

कार्य और शुरुआतों का सृजन कीजिये

आप कम काम कैसे कर सकती हैं? ऐसे रोचक कार्य ढूँढ़िये जिन्हें करने में बच्चे खुद दिलचस्पी लें और आप का समय आपका अपना हो जिसमें आप वहाँ मदद दे सकें जहाँ उसकी ज़रूरत हो।

सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से निष्क्रिय के बजाय सक्रीय होते हैं। उन्हें चुनौतियाँ पसंद आती हैं और ऐसी परिस्थितियों में काम करना अच्छा लगता है जहाँ चीज़ें आगे बढ़ती दिखें (जैसे खेल, चीज़ें बनाना, अभिनय करना या किसी समस्या का समाधान निकालना)।

उन्हें एक दूसरे के साथ मिल के काम करना अच्छा लगता है और एक दूसरे की मदद करना भी। इन प्रवृत्तियों का लाभ उठाते हुए ऐसे रोचक कार्यों की शुरुआत बच्चों के साथ कीजिये (न कि सारा काम खुद करके) और जैसे जैसे इन कार्यों को बच्चे पूरा करते हैं, आवश्यकतानुसार उनकी मदद कीजिये।

उदहारण के तौर पर, यदि आप गिनना सिखलाना चाहती हैं तो पाँसे के खेल खेलने दीजिये जिनमें बच्चों को गिनती करने की ज़रूरत पड़े (क्या आप ऐसे कुछ उदहारण सोच सकती हैं ?)। या एक छोटे बर्तन में कंकड़ भर के

उन्हें अनुमान लगाने को कहें कि कितने कंकड़ होंगे और फिर इसकी पुष्टि करने के लिए गिनवाइये। या यदि आप भाषा पढ़ा रही हैं तो ऐसे कार्ड के खेल बनाइये जहाँ उन्हें कोई भी कार्ड निकाल कर अक्षरों से शब्द बनाने हों। या उन्हें किसी कहानी के पात्र के बारे में पहेली बूझने को दीजिये जिसके लिए उन्हें खुद कहानी पढ़नी पड़े (आपके द्वारा पढ़ कर न सुनाई जाए)। या यदि आप ईवीएस पढ़ा रही हैं तो छात्रों से कहिये कि वो पत्तियों का संग्रह करें, उनके बारे में पता लगाएँ, उनका वर्गीकरण करें और उनके बारे में दिलचस्प प्रश्नों के उत्तर ढूँढें। या आप के किसी कथन के ऊपर प्रयोग बनायें जिससे कि वो सिद्ध हो या उसका प्रतिकार हो (उदहारण: एक सुई को तैराया जा सकता है)।

इन सब कार्यों में आपकी भूमिका ऐसे कार्यों या गतिविधियों को पहचानने की होनी चाहिए जो कि :

- छात्रों को दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण लगें (यानि जो उनके स्तर के लिए संभव हों पर बहुत आसान न हों)
- जो उनके लिए उद्देश्यपूर्ण हों (आपके उद्देश्य उनसे कुछ अलग हो सकते हैं)
- जो उन पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से जुड़े हों जिन पर आपका ध्यान है

आपने जब एक बार उस कार्य को प्रस्तुत कर दिया है तो बच्चे उसे स्वयं करना शुरू करें और आप सिर्फ वहाँ मदद करें जहाँ उसकी ज़रूरत हो।
अंततः जब कार्य पूरा हो जाये आपका काम उस अनुभव पर मनन के लिए स्थान बनाना है जिससे कि समेकन द्वारा सीखना सुनिश्चित हो। इस प्रकार बच्चे रटने के आधार पर न सीख कर स्वयं सोच कर सीख रहे हैं। और अपनी समझ खुद बना रहे हैं।

आप देख सकती हैं कि एक अच्छी कक्षा उस कक्षा से बहुत अलग है जिसमें ज़्यादातर शिक्षक ही बोलता जाता है, ताकीद करता रहता है और 'संचालन ' करता रहता है। रोचक कार्य बना कर बच्चों को उनको करते देखना इससे कहीं आरामदायक है, और आप कम से कम मदद करें।

निश्चय ही यह सब एक बार में नहीं हो जाता। आपको सोच समझ के उससे शुरू करना होता है जो वास्तव में हो सके। उसके बाद ऐसी परिस्थिति बनती है जिसमें आपकी कक्षा में ऐसे बच्चे हों जो अधिकांश समय खुद कार्य कर सकें।

अपने आप को ऊबने न दें

रोचक से रोचक कार्य भी बार बार करने पर उबाने लगते हैं और उनकी दिलचस्पी जल्द ख़त्म होने लगती है। सीखने वालों में दिलचस्पी का अभाव का परिणाम है सीखने में कमी। इसलिए ये न समझा जाए कि कुछ रोचक प्रतीत होने वाले कार्य बार बार करवाती जाएँ। जो कार्य हैं उनमें विविधता लानी होगी। विविधता के अभाव में सीखना कम होता है।

शुरुआत में एक नयी गतिविधि को लगभग उसी तरह से करवाना ज़रूरी हो सकता है। परन्तु शीघ्र ही उनमें कुछ फेर बदल की ज़रूरत होगी। उदहारण के तौर पर एक बूझने का खेल जिसमें शिक्षक संकेत शब्द देता है (जैसे, मैं एक पौधा हूँ जिसकी पत्तियाँ तुम खाते हो)। उसे कुछ समय पश्चात बदल देना ठीक होगा (बच्चों से पहेलियाँ बनाने को कहना या आगे जानवरों या गैसों के आधार पर संकेत शब्द देना) । पूरी कक्षा से जवाब माँगने के बजाय उन्हें समूहों में बाँटा जा सकता है या अकेले काम करने को कहा जा सकता है। संकेत शब्द लिखित रूप से दिए जा सकते हैं या बच्चे ऐसे कार्ड उठा सकते हैं जिन पर एक शब्द लिखा है या चित्र बना है जिसके आधार पर उन्हें पहेली बनानी है। किसी गतिविधि को बच्चों के स्तर, परिवेश और रुचियों के आधार पर आसान या मुश्किल बना देना संभव है। अक्सर ऐसा एक पाठ्य पुस्तक के पाठ के साथ नहीं हो पाता।
जैसा कि आप देख पा रही हैं, चाहे 40 मिनट का सत्र हो या पूरा दिन- उसमें इतनी विविधता हो सकती है कि बच्चों की दिलचस्पी बनी रहे। साथ ही, क्योंकि सारे बच्चे एक ही तरह से नहीं सीखते, विविधता लाने से सभी बच्चे वो तरीका ढूँढ लेते हैं जिससे वो बेहतर सीख पाएँ।

इसका यह आशय है कि पुराना तरीका -एक तरह की सामग्री से एक ही तरीके से पूरी कक्षा को पढ़ाना -बहुत उचित नहीं है। एक गतिविधि उन्मुखित कक्षा में विविधता के लिए जगह बनायी जा सकती है और अलग अलग बच्चों के लिए (अलग अलग समूहों में) उनके लिए जो उपयुक्त हो वो करने का मौका होता है। ऐसे स्वयं सीखने के चरण के दौरान शिक्षक के पास उन बच्चों की मदद करने का मौका होता है जिन्हें उसकी ज़्यादा ज़रूरत है।

आप संपन्न हैं !

ऐसी सभी चीज़ों की सूची बनाइये जो आपके स्कूल के अंदर और आसपास मौजूद हैं, जैसे, बेंच, पॉलिथीन की थैलियाँ, बीज, डंडियाँ , कंकड़, चार्ट, पत्तियाँ, रेत, पुराने कैलेंडर, डोरी और न जाने क्या क्या। आप पाएँगी कि इनमें से ज़्यादातर चीज़ें आपके कुछ न कुछ सिखाने के काम में आएँगी। उदहारण: पत्तियाँ वर्गीकरण और गणितीय संक्रियाओं को सीखने में मदद करती हैं, डंडियाँ क्रमबद्धता और स्थानिक कौशल में इत्यादि। सबसे अच्छी बात है कि ये सब मुफ़्त हैं और आपको इन्हें इकठ्ठा करने की भी ज़रूरत नहीं -बच्चों से ऐसी सामग्री इकठ्ठा करवाना सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा है।
इसके अतिरिक्त, ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जो आप और बच्चे मिल के बना सकते हैं जिनका इस्तेमाल विविध सीखने के उद्देश्य पूरा कर सकता है। उदहारण: मुखौटे, मिटटी के खिलौने, चित्रों के चार्ट, तरह तरह के फ़्लैश कार्ड इत्यादि।
अंततः आपमें से बहुत से इतने सौभाग्यशाली होंगे जिनके पास सामग्री सप्लाई की गयी होगी (उदहारण: विज्ञान या गणित की किट, पुस्तकालय के लिए किताबें इत्यादि) या आपको सामग्री खरीदने के लिए धन राशि प्रदान की गयी होगी। पहले, शिक्षक इस बात से परेशान रहते थे कि कोई सामग्री खराब हो गयी तो उन्हें भरपाई करनी पड़ेगी जिसके फलस्वरूप ये सामग्री अलमारियों और ट्रंकों में बंद पड़ी रहती थी। अब अधिकारियों को पता चला

है कि सामग्री का वास्तव में उपयोग हो रहा है। अब फटी किताब या घिसी सामग्री देख कर भँवें नहीं चढ़ाई जातीं। आप उसका अवश्य अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करें।
ऐसी सामग्री के साथ अभिक्रिया कर के बच्चे अपनी इन्द्रियों का प्रयोग कर के सीखते हैं। इस सामग्री का एक से दूसरी अवस्था तक हेरफेर कर के सीखते हैं जैसे कि मॉडल बनाना, समस्या का समाधान निकालना वगैरह।

इसलिए अब ऐसा कहना ठीक नहीं होगा कि सामग्री की कमी है। एक अच्छी कक्षा में हमें काफी सामग्री देखने को मिलनी चाहिए -बच्चों के हाथों में न कि सिर्फ दीवार पर प्रदर्शित !

बच्चों को कक्षा संचालन करने दीजिये

ओह! पर शिक्षक ये सब कैसे कर पायेगा? बच्चों को एक ऐसी टीम का सदस्य मान कर जो कक्षा संचालन में भूमिका निभा सकते हैं न कि एक ऐसा 'रेवड़ जिसे जैसे तैसे काबू में रखना है'। इसमें निहित एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है कि जब बच्चों के पास करने को उद्देश्यपूर्ण कार्य होते हैं तो उन्हें 'अनुशासन' की ज़रूरत नहीं पड़ती (इस बयान पर संदेह करने से पहले इसे आज़मा लें) । एक खुले वातावरण में जहाँ बच्चे बात कर सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं, किसी काम को मुकम्मल करने में एक दूसरे के साथ सहयोग कर सकते हैं, ये कोई अनहोनी बात नहीं कि वे निर्णय ले पाते हैं, ज़िम्मेदारी निभा पाते हैं और जितनी तरह से संभव हो शिक्षक के साथ सहयोग करना चाहते हैं। इसमें सामग्री एकत्र करना, वितरण व भण्डारण, ज़रूरत पड़ने पर दूसरे बच्चों की मदद और स्वयं अनुशासन बनाये रखना शामिल है। इसमें आखिरी बात तब सबसे सुगम हो पाती है जब पूरी कक्षा (यानि शिक्षक और बच्चे एक साथ मिल कर) काम सुचारु रूप से चलाने के लिए सर्वसम्मति से आधारभूत नियम बनाएँ। इसमें इन नियमों के उल्लंघन के परिणाम तय करना भी शामिल है। ऐसी परिस्थिति में ये आम बात है कि बहुत ही कम कभी ऐसी परिस्थिति बने जहाँ बच्चों से कुछ करवाना पड़े। बल्कि वे ये पता करने स्वयं आते हैं कि उन्हें क्या करना है।

हाँ, दिक्कत तब आती है जब शिक्षक स्वयं उन नियमों का उल्लंघन करता है जिन पर सर्वसम्मति बनी थी। यदि वो स्वेच्छा से परिणाम भुगतने को तैयार होता है तो वो अपने बच्चों को बराबरी और सहभागिता का एक पुख़्ता सन्देश देता है और अनुशासन एक 'समस्या' नहीं रह जाती।

इसलिए, एक अच्छी कक्षा में हम ये आशा कर सकते हैं कि सब एक समूह के रूप में काम कर रहे हैं और हरेक की आवाज़ सुनी जा रही है और हरेक की कोई ज़िम्मेदारी भी है।

एक दावत के लिए योजना बनाइये

स्वाभाविक है कि ऐसी कक्षा स्वतः नहीं बन जाएगी। इसके लिए योजना बनानी होगी। यहाँ फिर आप कुछ लोगों को यह कहते सुनेंगे कि शिक्षक योजना नहीं बना पाते हैं। और फिर यह कहना पड़ेगा की ये सच बात नहीं है। उदहारण के तौर पर मान लीजिये कि कोई महत्पूर्ण व्यक्ति अचानक से खाने पर आ रहा है और आपको एक

मेज़बान के रूप में उसकी अच्छी देखभाल करनी है। कुछ ही घंटे बाकी हैं। आप तुरंत ये देखेंगी कि घर पर पहले से क्या क्या उपलब्ध है, जितना कुछ है उसमें क्या मेनू बनाया जा सकता है और वो उस 'स्तर' का भी हो जो आप बनाये रखना चाहती हैं। फिर आप जल्दी वो सामान लाती हैं जिसकी ज़रूरत है और एक क्रम से तैयारी शुरू करती हैं और वो काम एक साथ करती हैं जो साथ साथ हो सकते हैं। और यूँ ही काम आगे बढ़ता है। क्या आप वास्तव में समझती हैं कि आपको योजना बनाना नहीं आता ?

अपनी कक्षा में भी आपको सबसे पहले ये पता करना होगा कि आपके बच्चे कहाँ पर हैं और उपलब्ध समय में आपको क्या लगता है कि उन्हें कहाँ पहुँचना चाहिए, इसके लिए आपको क्या करना होगा और किस क्रम में इत्यादि।

परन्तु जैसे कि अच्छा खाना पकाते वक़्त आप समय समय पर इस बात पर नज़र डालती रहेंगी कि सब ठीक से हो रहा है -नमक सही है और चीज़ें गल गयी हैं। सतत मूल्यांकन भी कुछ ऐसा ही होता है -आप इस बात पर नज़र रखती हैं कि सीखने की दिशा सही है कि नहीं। इसी प्रकार, यह भी बहुत अहम् है कि वो सब चीज़ें वहाँ उपलब्ध हैं जहाँ उनकी ज़रूरत है, समय गँवाया नहीं जा रहा है और सभी संसाधनों का सदुपयोग हो रहा है। बड़े बड़े अकादमिक शिक्षाविदों के शब्दों में इसी को 'प्रबंधन ' या 'कक्षा संघटन' कहा जाता है। असल में जिसने भी किसी मेहमान को दावत दी है (या सैंकड़ों रोज़मर्रा के काम किये हैं) उसे उसके बारे में यूँ भी काफी कुछ पता है।

साथ में, आप अपने मेहमान के आराम के लिए कई चीज़ें करती हैं जिससे उसे आपके यहाँ आ के अच्छा लगे और उसकी अच्छी खातिरदारी हो। निश्चय ही आपकी कोशिश होगी कि मेहमान फिर आपके घर आना चाहे! कक्षा के सन्दर्भ में, इसे ऐसा माहौल बनाना कहेंगे जो बच्चे का स्वागत करे और सीखने को संभव बनाने में इसकी बहुत अहम् भूमिका है।

अंत में

यह लेख यह मान के लिखा गया है कि शिक्षक एक 'खाली घड़ा' नहीं है जिसे ये बताना पड़े कि क्या करना है। बल्कि शिक्षक को एक साथी के रूप में देखा जा रहा है जिसके साथ बुनियादी सिद्धान्त साझा किये जा रहे हैं। और उन सिद्धान्तों पर सम्मति बनानी है जिसके आधार पर उन्हें अपने समाधान खुद ढूँढने हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है बच्चों की 'मेज़बानी' का। अपनी तरफ से यह सुनिश्चित करना कि वो प्रोत्साहन के वातावरण में सक्रीय रूप से सीखें। क्या ये किया जा सकता है? क्या आप तैयार हैं? इस प्रयास के लिए आपको ढेरों शुभकामनाएँ।